

दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ : फ्रायड के नज़रिए से कमलावती कुमारी

पीआरटी, दक्षिण पूर्व रेलवे मिश्रित प्रा. विद्यालय, आद्रा, पुरुलिया, प. बंगाल, भारत।

Article Info

Volume 3, Issue 5

Page Number: 132-136

Publication Issue :

September-October-2020

Article History

Accepted : 10 Sep 2020

Published : 20 Sep 2020

सारांश – दैनिक जीवन में होनेवाली भूलों के पीछे व्यक्तिगत अचेतन के साथ-साथ सामूहिक अचेतन का भी हाथ होता है। उन्होंने अपने विश्लेषणात्मक सिद्धांत में दावा किया कि दैनिक जीवन की कुछ भूलें ऐसी हैं जिनकी समुचित व्याख्या व्यक्तिगत अचेतन के आलोक में संभव नहीं है। जैसे हम खेल-खेल में चिड़ियों की तरह आवाज क्यों निकालते हैं, कभी-कभी हम जानवरों की बोली बोलने की भूल क्यों करते हैं, आदि की व्याख्या सामूहिक अचेतन के आधार पर ही अधिक तर्कसंगत है। अतः दैनिक जीवन की भूलों की समुचित व्याख्या करने में मनोविश्लेषण सिद्धांत का विश्लेषणात्मक सिद्धांत एक दूसरे के सम्पूरक हैं।

मुख्यशब्द – दैनिक जीवन, मनोविकृतियाँ, फ्रायड, अचेतन, विश्लेषणात्मक, मनोवैज्ञानिक।

हम सभी अपने दैनिक जीवन में छोटी – मोटी गलतियाँ करते रहते हैं और यही समझते हैं कि ये गलतियाँ अज्ञानवश या अनायास हो जाती हैं तथा हम तुरंत ही उन्हें सुधार भी लेते हैं। जैसे – लिखने की भूलें, बोलने की भूलें, वस्तुओं को रखकर भूल जाना आदि। ये भूलें किसी बीमारी के कारण नहीं होतीं क्योंकि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति में भी वे दिखाई देती हैं। ये ऐसी भूलें हैं जिसे कोई भी व्यक्ति जानकर नहीं करता है और यदि बाध्यता नहीं हो तो वह इन्हें करना भी नहीं चाहता है। मनोवैज्ञानिक इन गलतियों को सांकेतिक क्रियाओं (symbolic actions) के नाम से पुकारते हैं। फ्रायड (freud) के अनुसार ऐसी भूलें अनायास नहीं होती बल्कि उनका कारण होता है, जो अचेतन (Un- Conscious Mind) में दमित होता है। अचेतन में दमित विरोधी विचार, कामुख इच्छायें, अतृप्त इच्छायें, आक्रामक प्रवृत्तियाँ ही भूलों का कारण होती हैं। अचेतन में दमित ऐसी प्रवृत्तियाँ, इन गलतियों या भूलों द्वारा चेतन (Conscious Mind) में अभिव्यक्त होती हैं। ऐसी गलतियों को ही फ्रायड ने “दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ” कहा है।

फ्रायड ने अपनी पुस्तक “Psychopathology of Everyday life” जो 1914 में प्रकाशित हुई, में इन मनोविकृतियों का विस्तृत वर्णन किया है। इन मनोविकृतियों (Psychopathologies) में बोलने की भूलें (Slips of Tongue), लिखने की भूलें (Slips of Pen), किसी व्यक्ति या स्थान के नामों को भूलना, चीजों को इधर-उधर रखने की भूलें, पहचानने की भूलें, छपाई की भूलें, अनजाने में की गयी क्रियाएँ आदि प्रमुख हैं। चूँकि इन भूलों के कारण अचेतन में होते हैं, अतः व्यक्ति इन भूलों के प्रति अनभिज्ञ रहता है, तथा उन्हें मात्र संयोगवश होनेवाली गलती समझकर अपने-आप को संतुष्ट कर लेता है।

दैनिक जीवन के मनोवृत्तियों के प्रमुख प्रकार

फ्रायड ने अनेक तरह की मनोविकृतियों का वर्णन किया है जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं-

(1) **बोलने की भूलें (Slip of Tongue)** : दैनिक-जीवन में प्रायः व्यक्ति से बोलने की भूलें हो जाया करती हैं। वह बोलना कुछ चाहता है पर बोल कुछ और देता है। मेरिंगर तथा मेयर (Meringer and Mayer, 1948) ने बोलने में इस तरह की भूल का कारण शब्दों की ध्वनियों में समानता बतलाया है। परन्तु फ्रायड ने इसका खंडन किया है और कहा है कि, इसका कारण अचेतन में दमित इच्छाएँ होती हैं जो इस तरह की भूल के रूप में व्यक्त होकर अपनी आंशिक संतुष्टि कर लेती हैं। उदाहरणस्वरूप, एक बार एक नेता ने किसी सभा का उद्घाटन करते हुए कहा, “सज्जनों मैं घोषणा करता हूँ कि ‘कोरम’ पूरा है अतः मैं सभा की कार्यवाही विधिवत रूप से समाप्त करता हूँ।” जबकि नेताजी को बोलना था “सज्जनों मैं घोषणा करता हूँ कि ‘कोरम’ पूरा है और अब मैं सभा की कार्यवाही विधिवत रूप से प्रारंभ करता हूँ।” बाद में नेताजी के विचारों के विश्लेषण से पता चला कि नेताजी उस सभा को नहीं होने देना चाहते थे। क्योंकि उस सभा का उनकी नजरों में कोई औचित्य नहीं था, ना ही उससे किसी उद्देश्य की पूर्ति होती थी। इसी तरह बोलने की भूल का एक अच्छा उदाहरण ब्राउन (Brown, 1969, P-233-234) ने दिया है - ब्राउन के एक मित्र को अपने ऊपर काफी गर्व था तथा वह अपने ज्ञान-भंडार को अन्य व्यक्तियों के ज्ञान-भंडार से काफी बड़ा समझता था। एक बार उसे एक सभा में अपने मित्र के लेख पर बधाई देनी थी, सामान्यतः उसे कहना था, “क्या मैं इस महान लेख पर अपना साधारण विचार प्रकट कर सकता हूँ।” परन्तु उसने कहा, “इस निम्नकोटी के लेख पर मैं अपना महान विचार प्रकट कर सकता हूँ।” उपरोक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है कि बोलने की भूल अचेतन द्वारा प्रेरित होती है।

(2) **नामों को भूलना** : प्रायः हम अपने दैनिक जीवन में परिचित व्यक्तियों, वस्तुओं तथा स्थानों के नामों को स्थायी या अस्थायी तौर पर भूल जाते हैं। कई बार तो बहुत कोशिश करने के बाद भी उनके नाम याद नहीं आते हैं, परन्तु अपने आप फिर बाद में याद आ जाते हैं। यह अस्थायी रूप से भूलने का कारण अर्धचेतन (Semiconscious) होता है। परन्तु स्थायी रूप से भूलना या याद नहीं आने का कारण अचेतन ही होता है। नामों को भूलने के सामान ही हम अन्य बातों को भी भूलते हैं। जैसे किसी से किये गए

वायदों को भूल जाना, किसी से ली गयी वस्तु को लौटाना भूल जाना आदि भी दैनिक जीवन में प्रायः होते रहते हैं, इन सभी तरह की भूलने की क्रिया का कोई स्पष्ट कारण हमें नहीं पता चलता है और हम इसे संयोगवश या निरर्थक होने वाली क्रिया समझकर उस पर ध्यान नहीं देते हैं। परंतु फ्रायड का कहना है कि ये सभी तरह का भूलना निरर्थक या संयोगवश नहीं होते बल्कि ये सार्थक होते हैं और उनका कारण अचेतन या अर्धचेतन में होता है। फ्रायड ने अपनी पुस्तक 'psychopathology of everyday life' में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है- एक व्यक्ति को किसी महिला से प्रेम हो गया जो कि एक तरफ़ा था। महिला को उस व्यक्ति से प्रेम नहीं था। कुछ दिनों बाद उस महिला की शादी किसी अन्य व्यक्ति से हो गयी। इस व्यक्ति को महिला का प्रेमी पहले से जनता था तथा उसके साथ उनका व्यापारिक संबंध था। पुरानी जान-पहचान होने के बाद भी वह व्यक्ति महिला के पति का नाम भूल जाया करता था। इसका कारण स्पष्ट था कि वह व्यक्ति महिला के पति का नाम तक भूल जाना चाहता था।

(3) लिखने की भूलें:- लिखने की भूलें भी हमारे दैनिक जीवन की सामान्य भूलों में से एक है। इस तरह की भूल में व्यक्ति लिखना कुछ और चाहता है और लिख कुछ और ही देता है। प्रायः ऐसी गलतियों का कारण लिखते समय ध्यान न देना या ध्यान का बँट जाना या भाषा-ज्ञान का अभाव माना गया है। परंतु फ्रायड ने विश्लेषणात्मक सबूत देकर यह साबित कर दिया है कि लिखने की भूलें भी अचेतन की दमित इच्छाओं के कारण ही होती हैं। ब्राउन (Brown, 1969) ने इससे सम्बंधित एक उदाहरण दिया है, जिसमें डॉ. कार्ल मेनिंगर किसी कार्य से एक व्यक्ति के घर पर मिलने गये। पर उस व्यक्ति ने डॉ. मेनिंगर में कोई रुचि नहीं दिखाई, और मात्र एक साधारण व्यक्ति के रूप में व्यवहार किया। मेनिंगर ने वापस आकर उस व्यक्ति को एक धन्यवाद पत्र लिखा, "मैं आपका धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ क्योंकि मेरे सम्मान में आपने कोई शिष्टता नहीं दिखाई।" लेकिन सचमुच में वे लिखना चाहते थे, "मैं आपको धन्यवाद करना चाहता हूँ क्योंकि मेरे सम्मान में आपने काफी शिष्टता दिखाई। स्पष्ट है कि डॉ. मेनिंगर उस व्यक्ति के व्यवहार के प्रति आभार प्रकट करने की इच्छा नहीं रखते थे।

(4) छपाई की भूलें:- छपाई की भूलें भी हमारे दैनिक जीवन में अक्सर देखने को मिलती हैं। समाचार-पत्रों, पुस्तकों, विज्ञापनों आदि में इस तरह की भूलें देखने को मिलती हैं तथा बाद में इन गलतियों का सुधार भी देखने को मिलता है। चूँकि इस तरह की भूलों में लेखक, प्रूफ संशोधक, कम्पोजीटर और संपादक सबका हाथ रहता है, इसलिए एक व्यक्ति के अचेतन मन के आधार पर इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। फिर भी, ऐसी छपने की भूलों में अचेतन मन काम करता है। फ्रायड ने इस प्रकार की भूलों की विस्तृत व्याख्या की है। डॉ. स्टीकेल (Dr. Stekel) ने एक बड़ा ही दिलचस्प उदाहरण दिया है। एक समाचार पत्र में छपा, "हमारे पाठक इस सत्य के गवाह हैं कि किस 'स्वार्थ' भाव से हमने हमेशा मानव जाति की सेवा की है।" यहाँ स्पष्ट है कि संपादक 'निःस्वार्थ' भाव छापना चाहता था पर सच्ची बात छप गयी। इस तरह छपने की भूलों से भी उससे संबंधित व्यक्तियों की अचेतन इच्छाएँ संतुष्ट होती हैं।

(5) **पहचानने की भूलें:-** हमारे दैनिक जीवन में पहचानने की भूल भी एक महत्वपूर्ण भूल है। ऐसी भूलें किसी वस्तु, स्थान, किसी व्यक्ति को पहचानने से सम्बंधित होती हैं। अक्सर देखा गया है कि हम किसी अपरिचित व्यक्ति को परिचित व्यक्ति या मित्र समझ लेते हैं, तथा किसी परिचित या वस्तु को देखकर भी पहचान नहीं पाते हैं। पहचानने की इन दोनों तरह की भूलें अधिक सामान्य हैं और इनके द्वारा व्यक्ति के मन में दमित इच्छाओं के बारे में हमें संकेत मिलते हैं। फ्रायड के अनुसार जब कोई व्यक्ति अपने मित्र या प्रेमपात्र को देखना चाहता है तो अपरिचित को ही अपना मित्र या प्रेमपात्र समझ बैठता है। इसके विपरीत परिचित अप्रिय व्यक्ति को भी व्यक्ति नहीं पहचान पाता है।

(6) **वस्तुओं को गलत स्थान पर रखना:-** यह भी दैनिक जीवन की मनोविकृतियों में से एक है। अक्सर देखा गया है कि हम वस्तुओं जैसे- चाभी, महत्वपूर्ण कागज, रुमाल, कलम, डायरी आदि को हम इधर-उधर रख देते हैं, और समय पर जब हम उन्हें खोजते हैं तो वह हमें नहीं मिलती है। दैनिक जीवन की इन भूलों के पीछे भी अचेतन की दमित इच्छायें सक्रिय होती हैं। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति में उस वस्तु को अपने सामने से हटा देने की प्रवृत्ति होती है, क्योंकि ऐसा करने से उनकी किसी समस्या या उलझन का समाधान हो जाता है। जोन्स (jones) ने इस संबंध में एक उदाहरण दिया है कि जब उन्हें अधिक खांसी आती थी तो वे अपनी धूम्रपान पाईप भूल से गलत स्थान पर रख देते थे और काफी प्रयास के बावजूद भी वे उसे खोज नहीं पाते थे। परंतु जब खांसी समाप्त हो जाती थी तो धूम्रपान-पाईप मिल जाती थी।

(7) **अनजाने में की गयी क्रियाएँ:-** अनजाने में की गयी गलतियाँ भी हमारे दैनिक जीवन की मनोविकृतियों में शामिल हैं। ऐसी गलतियाँ प्रायः होती हैं। लोग यह कह कर संतोष कर लेते हैं कि हम बहुत भुलक्कड़ हैं। परन्तु वास्तव में ये गलतियाँ दमित इच्छाओं के कारण ही होती हैं। हम जिस कार्य को करना चाहते हैं, उसके बदले कोई और कार्य कर बैठते हैं। यह कार्य इच्छा के अनुकूल होता है। जोन्स(jones) ने अपने अनुभव के आधार पर एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है- एक दिन जोन्स ने एक डिब्बा सिगरेट खरीदा, परन्तु पहले वाले डिब्बे में भी कुछ सिगरेट बची हुई थी। उन्हें नई सिगरेट पीने की इच्छा थी, परन्तु मितव्ययिता को ध्यान में रखकर वे पुरानी सिगरेट पीने का निर्णय कर किताब पढ़ने में व्यस्त हो गये। किताब पढ़ते-पढ़ते उन्होंने नई सिगरेट को ही पी लिया, जिसका ज्ञान उन्हें बाद में हुआ और वे समझ नहीं पाये कि ऐसी गलती क्यों हुई।

(8) **सांकेतिक क्रियाएँ:-** सांकेतिक क्रियाओं को भी फ्रायड ने दैनिक जीवन की मनोविकृतियों में रखा है। इन क्रियाओं का कोई अर्थ नहीं होता और ऐसी क्रियाओं को करनेवालों को भी इसका अर्थ ज्ञात नहीं होता है। परन्तु उनके अचेतन मन का विश्लेषण करने पर ये पता चलता है कि ये क्रियाएँ भी सार्थक हैं। इन क्रियाओं के अंतर्गत बटन लगाना और खोलना, बार-बार अंगूठी निकलना और पहनना, ताले की चाभी को हाथ में नचाते रहना आदि क्रियाएँ आती हैं। यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति द्वारा दी गयी अंगूठी को बार-बार उँगली से निकलती और पहनती है, तो इसका मतलब यह हुआ कि वह अपने पति से संतुष्ट नहीं है और उससे छुटकारा पाना चाहती है।

(9) वस्तुओं का खो जाना:- वस्तुओं का खो जाना भी दैनिक जीवन की भूलों में शामिल हैं। प्रायः हम देखते हैं कि व्यक्ति अपनी किसी वस्तु को किसी ऐसी जगह छोड़ देता है कि बाद में उसे यह बिल्कुल स्मरण नहीं रहता कि उसने उसे रखा कहाँ था। ऐसी स्थिति में वस्तु खो जाती है। उसकी यह भूल भी अकारण नहीं है। सच तो यह है कि यह भूल भी उद्देश्यपूर्ण है। फ्रायड ने अन्य भूलों की तरह इस भूल को भी कारणवश व उद्देश्यपूर्ण माना है, उनके अनुसार इस भूल के माध्यम से व्यक्ति की दमित इच्छाओं या अचेतन प्रेरणाओं की संतुष्टि होती है, जिससे अचेतन द्वंद्वों का समाधान होता है। उदाहरण के तौर पर, एक लड़की की शादी की अंगूठी शादी की पहली रात में ही खो गयी। लाख कोशिश करने पर भी वह नहीं मिल पायी। मनोविश्लेषण से पता चला कि वह लड़की उस युवक से विवाह करना ही नहीं चाहती थी।

मनोवैज्ञानिकों के बीच इस बात को लेकर सहमति है कि दैनिक जीवन की भूलें कारणवश या उद्देश्यपूर्ण होती हैं। ये भूलें निरुद्देश्य नहीं होती हैं। फ्रायड (freud) तथा युंग (jung) दोनों इस बात से सहमत हैं कि दैनिक जीवन की प्रत्येक भूल कारणवश या उद्देश्यपूर्ण होती हैं। परन्तु इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के बीच दैनिक जीवन की भूलों के आधार को लेकर स्पष्ट अंतर है। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषण सिद्धांत (Psychoanalytic theory) के अंतर्गत दैनिक जीवन की विभिन्न भूलों की व्याख्या व्यक्तिगत अचेतन (Personal unconscious) के आधार पर की है। उन्होंने कहा कि दैनिक जीवन की भूलों के पीछे व्यक्तिगत अचेतन में दमित इच्छाएँ सक्रिय रहती हैं।

दूसरी ओर युंग (jung) ने कहा है कि दैनिक जीवन में होनेवाली भूलों के पीछे व्यक्तिगत अचेतन के साथ-साथ सामूहिक अचेतन का भी हाथ होता है। उन्होंने अपने विश्लेषणात्मक सिद्धांत में दावा किया कि दैनिक जीवन की कुछ भूलें ऐसी हैं जिनकी समुचित व्याख्या व्यक्तिगत अचेतन के आलोक में संभव नहीं है। जैसे हम खेल-खेल में चिड़ियों की तरह आवाज क्यों निकालते हैं, कभी-कभी हम जानवरों की बोली बोलने की भूल क्यों करते हैं, आदि की व्याख्या सामूहिक अचेतन के आधार पर ही अधिक तर्कसंगत है। अतः दैनिक जीवन की भूलों की समुचित व्याख्या करने में मनोविश्लेषण सिद्धांत का विश्लेषणात्मक सिद्धांत एक दूसरे के सम्पूरक हैं।

संदर्भ सूची :

- [1]. S. Freud: The Psychopathology of Everyday Life, Standard Edition, Vol. VI,
- [2]. Meringer and C. Mayer (1948). A study on Mistakes in Speech and Reading, p-72
- [3]. Ernest Jones, (1953). The Life and Work of Sigmund Freud , vol -1, Basic Books,
- [4]. Brown, J.W. (1969). Brown's syndrome. Described in Illustrated Dictionary of Eponymic Syndromes and Diseases and their Synonyms Saunders, Philadelphia.
- [5]. Wilhelm Stekel (1950). "The Doubt", Compulsion and Doubt (London: Peter Nevill, 1950)